भाषा विज्ञान : परिभाषाएँ और उपयोगिता

भाषा विज्ञान दो शब्दों के मेल से बना है। भाषा तथा विज्ञान। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है। समाज में रहकर वह अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। व्यक्ति अपने विचारों को जिस माध्यम से अभिव्यक्त करता है उसे 'भाषा' कहते हैं। दूसरे शब्दों में मानव अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक साधन को अपनाता है वह 'भाषा' है। विचारों की अभिव्यक्ति भाषा से ही संभव है। आज मनुष्य ने भाषा के कारण ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित किया है। मनुष्य केवल भाषा के कारण ही चर और अचर जगत का मालिक बन बैठा है। भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है इसका अर्थ है 'बोलना' और भाषा का अर्थ है - 'जिसे बोला जाए' व्यावहारिक दृष्टि से भाषा अत्यंत उपयोगी है। दूसरा शब्द विज्ञान है- विज्ञान का अर्थ है 'विशिष्ट ज्ञान' । भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषा विज्ञान कहलाता है। यह अन्य विज्ञानों की अपेक्षा एक नवीन विज्ञान है। भाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। इसमें भाषा से संबंधित सभी मद्दों का विस्तार से व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। भाषा से संबंधित प्रश्नों का वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित, अध्ययन किए जाने के कारण इसको विज्ञान कहा जाता है। भाषा विज्ञान व्याकरण का व्याकरण होने के कारण ध्वनि परिवर्तन आदि सभी दिशाओं में काम करता है। भाषा विज्ञान भाषा के उच्चारण, प्रयोग और उपयोग की शिक्षा देता है।

भाषा विज्ञान का नामकरण :-- भाषा विज्ञान शब्द पाश्चात्य विद्वानों की देन है। यूरोप में भाषा संबंधी अध्ययन को फिलोलोजी के आगे कम्पैरटिव शब्द जोड़कर 'कम्पैरटिव फिलोलोजी' कहा गया। उन्नीसवी शताब्दी तक व्याकरण तथा भाषा विषयक अध्ययन को प्रायः एक ही समझा जाता है। अतः इसे विद्वानों ने 'कम्पैरटिव ग्रामर' यह नाम दिया।फ्रांस में इसे linguistique (लिंगीस्टिक) कहा गया। पूरे यूरोप में इसे 19 वी शताब्दी में linguistique या linguistics कहा गया। इसके अलावा सायन्स ऑफ लैग्वेज़ ग्लौटोलेजी आदि नाम भी प्रयुक्त हुये।

जब हम हिन्दी भाषा का विचार करते हैं तो हिन्दी में भी कई नाम मिलते है। जैसे – भाषा विज्ञान, भाषा शास्त्र, भाषा विचार,भाषा लोचन, भाषा तत्त्व, तुलनात्मक भाषा विज्ञान इत्यादि।

भाषा विज्ञान परिभाषाएँ :--

प्रमुख विद्वानोंने दी हुई भाषा विज्ञान की परिभाषाएँ निम्नानुसार है –

श्याम सुन्दर दास :-- अपने 'भाषा रहस्य' ग्रंथ में श्याम सुन्दर दास लिखते है- " भाषा विज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट,उसके विकास तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।"

भोलानाथ तिवारी :-- अपने 'भाषा विज्ञान' ग्रंथ में भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान की परिभाषा इस प्रकार देते है –

" जिस विज्ञान के अंतर्गत वर्णनात्मक क्षेत्र,ऐतिहासक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति,एवं विकास आदि की सम्यक व्याख्या कराते हुए, इन सभी के विषय में सिद्धांतों का निर्धारण हो उसे भाषा विज्ञान कहते है।"

डॉ. बाबुराम सक्सेना :-- “भाषा-तत्त्वों का अध्ययन भाषा विज्ञान का विषय है।"

डॉ. मनमोहन गौतम :-- "भाषा-विज्ञान वह शास्त्र है जिसमें ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा भाषा की उत्पत्ति, बनावट, विकास एवं ह्रास आदि की वैज्ञानिक व्याख्या की जाती है।"

डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा :-- “भाषा-विज्ञान का सीधा अर्थ है – भाषा का विज्ञान और विज्ञान का अर्थ है- विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषा विज्ञान कहलाएगा।"

डॉ. अम्बाप्रसाद 'सुमन' :-- “भाषा-विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषाओं का सामान्य रूप से या किसी एक भाषा का विशिष्ट रूप से प्रकृति, संरचना, इतिहास, तुलना,प्रयोग आदि की दृष्टि से सिद्धान्त निश्चित करते हुए वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।"

डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया :-- "भाषा-विज्ञान का तात्पर्य उस शास्त्र से है जिसमें भाषा का तात्त्विक विश्लेषण मात्र किया जाता है।"

भाषा-विज्ञान की उपयोगिता

1] ज्ञान पिपासा की तृप्ति :-- भाषा विज्ञान हमारी जिज्ञासाओं को तृप्त करता है। ज्ञान की वृद्धि मानव मात्र का कर्तव्य है। भाषा हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है उसके विषय में विस्तृत जानकारी प्रत्येक मानव के लिए अनिवार्य है।

2] भाषा के परिष्कृत रूप का ज्ञान:-- भाषा-विज्ञान के द्वारा भाषा का सूक्ष्मतम अध्ययन किया जाता है। भाषा हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। भाषा विज्ञानद्वारा ध्वनियों, वर्णों, प्रकृति, प्रत्यय और अर्थ का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है। जिससे शुद्ध अर्थ का बोध होता है।उच्चारण की शुद्धता आती है। और भाषा के परिष्कृत रूप के साथ वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है जिससे शुद्ध अर्थ का बोध होता है। उच्चारण की शुद्धता आती है।

3] भाषा के तत्त्वों का ज्ञान :-- भाषा का शब्द शुद्ध व्यवहार करने के लिए भाषा के तत्वों की जानकारी भी जरूरी है। भाषा में ध्वनि का महत्व सबसे अधिक है। प्राचीन समय में ध्वनियों के ज्ञान को शिक्षा कहा जाता था। ध्वनि भाषा विज्ञान का आधार है। इसी से ठीक ठीक बोलने और पढ़ने लिखने के लिए भाषाविज्ञान की आवश्यकता है।

4] भाषा की रचना को समझना ::-- भाषा का ठीक-ठीक और यथोचित ज्ञान भाषा विज्ञान के द्वारा मिलता है। जीवन यापन करते हुए सबेरे से लेकर श्याम तक विभिन्न वस्तुओं को हम सब देखते हैं, इनका उपयोग करते हैं, इसी दृष्टि से हमारा संबंध भाषा से है। भाषा की रचना सार्थक ध्वनियों के उच्चारण से होती है। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की ध्वनियां अलग होती है। एक भाषा से दूसरी भाषा की ध्वनियों में अंतर रहता है। सार्थक ध्वनियों से शब्द के साथ पद और वाक्य की रचना की जाती है और वाक्य हमारे विचारों को दूसरों तक पहूँचाने में सहयोग देते हैं। इसी से भाषा विज्ञान की उपयोगिता हमारे जीवन से जुड़ी हुई है। भाषा को व्याकरण अनुशासित करता है, नियमों में बांधता है। फिर भी भाषा को केवल भाषा शास्त्रियों के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। हम और आप भाषा से दिन-रात काम लेते हैं। इसी से उसके ठीक-ठीक व्यवहार करने की जिम्मेदारी भी हमारी है।

5] समाज और उसकी परंपरा को समझना : – प्राचीन समय से वर्तमान तक समाज में परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं। सामाजिक रूप और संस्कृति के ज्ञान को भाषा सदियों सुरक्षित रखती है और अगली पीढ़ियों के लिए सौंप देती है। पाणिनी ने भाषा के अन्य तत्वों के साथ जिन स्थान-नामों का विवेचन किया है, वे स्थान- नाम सामाजिक दशा और संस्कृति के जीवंत प्रमाण है। इस तरह भाषा विज्ञान समाज और उसकी संस्कृति की परंपरा समझने में सहायक है। हमें प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता, संस्कृति का ज्ञान होता है।

6] साहित्य के अंग एवं उद्देश्य को समझना :-- भाषाविज्ञान की सहायता से साहित्य के विविध अंग, रचना प्रक्रिया और साहित्य के उद्देश्य समझने में सुविधा रहती है।

7] वाक- चिकित्सा मैं सहायक :-- वाक-चिकित्सा में भाषाविज्ञान सहायक है। इसी आधार पर तुतलाहट अथवा हकलाहट की चिकित्सा में उच्चारण के दोषों को उच्चारण एवं की बनावट के साथ रखकर दूर करने का प्रयास किया जाता है।

8] अनुवाद में सहायक :-- भाषिक संकेत, दूरसंचार और यांत्रिक अनुवाद में सहायक है। भाषा विज्ञान संचार के साधनों को विकसित करने के रूप में सुधार करने और नवीन रूप देने में सहयोग देता है।

बौद्धिक जिज्ञासा की पूर्ति, भाषा के यथोचित ज्ञान, भाषा के शुद्ध व्यवहार, समाज की दशा और संस्कृति के रूप, साहित्य के अध्ययन के साथ वाक-चिकित्सा में भाषाविज्ञान सहयोग देता है।

9] भाषा संबंधी समस्याओं का समाधान प्राप्त होना **:--** अपनी चिर-परिचित भाषा के विषय में मनुष्य के मस्तिष्क में अनेक प्रश्न उठते हैं। मनुष्य स्वभावतः जिज्ञासु है। जब मनुष्य साहित्य अथवा भाषा का अध्ययन करता है तब उसके मन में अनेक प्रश्न उठते हैं। भाषा विज्ञान उन भावों की तृप्ति करता है और अनेक भाषा संबंधी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

10] ज्ञान की वृद्धि **:--** भाषा विज्ञान का विषय क्षेत्र अत्यंत विशाल है। उसका संबंध एक भाषा से न रहकर विश्व के किसी भी भाषा से हो सकता है। किसी भी काल में प्रवेश हो सकता है। जिससे वह किसी भी ज्ञान को आत्मसात करने की क्षमता रखता है। साथ ही उसके ज्ञान के अनेक विषयों से संबंध होने के कारण वह इतिहास, मनोविज्ञान, साहित्य, आदि की सहायता से अपने ज्ञान को वैज्ञानिक एवं संमत बना सकता है जिससे ज्ञान की वृद्धि होती है।

11] विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होना **:--** भाषा विज्ञान मानव की दृष्टि को उदार बनाता है। उन्हें एक दूसरे के निकट लाने में सहायता करता है। उनमें विश्व बंधुत्व की भावना पैदा करता है क्योंकि भाषा शास्त्र या अध्ययता किसी एक भाषा से संबंधित न रहकर अनेक भाषाओं को उदार भावनाओं से देखता है, जिससे वह देश की सीमा के परदे से निकल कर विश्व में विचरण करता है। उसके मन में मानव के प्रति बंधुत्व की भावना उत्पन्न होती है।

12] शब्द उच्चारण व अर्थ प्राप्ति में सहायक **:--** प्राचीन साहित्य के शब्दों के अर्थ प्राप्ति में भाषा विज्ञान हमारी सहायता करता है। इस प्रकार के अनेक उच्चारण एवं प्रयोग ऐसे होते हैं जिनका सही प्रयोग हमारे ज्ञान के बाहर होता है और हम अर्थ का अनर्थ कर सकते हैं। भाषा विज्ञान ऐसी स्थिति में हमारा सही मार्गदर्शन करता है। सही उच्चारण एवं प्रयोग संबंधी समस्याओं का समाधान करता है।

13] लिपि की शुद्धता बताने में सहायक **:--** भाषाविज्ञान भाषा की क्लिष्टता से हमें बचाकर सरलता और शुद्धता की ओर हमें ले जाता है। भाषा विज्ञान अनेक समस्याओं को समझाता है। इस प्रकार लिपि की शुद्धता और वैज्ञानिकता में हमारी सहायता करते हैं।

14] शब्दकोश के निर्माण में सहायक **:--** वैज्ञानिक लिपि, शब्दकोश, व्याकरण आदि के निर्माण में भाषाविज्ञान हमें पूर्णतः सहायता करता है।